बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

self Attested
Arun

कविता प्रसंग

Scanned with CamScanner

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह
डॉ. ममता कालिया
डॉ. के. सी. शर्मा
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
प्रो. माधव हाड़ा

संपादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला-पक्ष : निकिता त्रिपाठी, प्रयागराज

सहयोग राशि : 150 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–175 रुपये
300 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–325 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)
The Draft/Cheque may please be made in favour of 'Banaas Jan'
OurA /C Details : SBI C/A No.61159024776
IFSC Code : SBIN0032036
Branch name : State Bank of India, D L DA V Model School, BN Block
Shalimar Bagh, New Delhi-110088

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
व्हाट्सअप : +91–8130072004 (केवल संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
A Collection of Literature
Language : Hindi

ISSN 2231–6558

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

अपनी बात		4
पहली बार : कविताएँ		
गौरव सिंह		5
ज्योति तिवारी		14
विरासत		
मेघदूत को फिर से पढ़ते हुए	अवधेश प्रधान	25
प्रति-आख्यान (काउंटर नेरेटिव) की अवधारणा और मरु-गुर्जर प्रेमाख्यान जेठवा-ऊजळी	प्रेम सिंह	34
पूर्व कथा संपेख	माधव हाड़ा	43
परिदृश्य		
समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी	रविशंकर सोनकर	59
कठिन दिनों के कवि बार-बार लौटकर आते हैं	शिरीष मौर्य	65
पहाड़ों की यातनाएँ हमारे पीछे हैं....	ए अरविंदाक्षन	70
ज्ञानेंद्रपति की कविता : प्रकृति परंपरा और आधुनिकताबोध	रविरंजन	78
अरुण कमल : नये इलाके का प्रतिबद्ध प्रहरी	नीरज	87
स्त्री कविता का 'पोलिटिकल' और कात्यायनी की कविता	रेखा सेठी	96
आदिम कस्तूरी की सुगन्ध : अनिल मिश्र का कवि कर्म	जितेन्द्र श्रीवास्तव	108
स्मृतियों से निर्मित जितेन्द्र श्रीवास्तव का काव्य-वैभव	अरुण कुमार पाण्डेय	114
पुनःपाठ		
उपभोक्ता संस्कृति के अँधेरे में समरसता का आकाशदीप	रामेश्वर राय	119
कामायनी : आलोचकों की दृष्टि में	रेणु बाला	126
अंधकार और प्रकाश के सम्मिलन का प्रारम्भिक बिन्दुः नीहार	वर्षा अग्रवाल	136
रश्मिरथी की लोकप्रियता का समाजशास्त्र	रविरंजन	145
दबी हुई दूब का रूपक	गजेंद्र पाठक	155
मैं अब घर जाना चाहता हूँ	आशीष त्रिपाठी	167
एक कविता : एक पाठ		
निराला की कविता का तेवर	गोपाल प्रधान	177
नन्ही परी के लिए स्वागत गान	सदाशिव श्रोत्रिय	180
मुझे देवीप्रसाद मिश्र की कविता के पास उतार देना	प्रभात	184
कुछ नये संग्रह		
आँसू का वजन	मानवेन्द्र सिंह	186
अफसोस दर्पण	प्रियदर्शी ठाकुर 'ख़याल'	191
तनी हुई रस्सी पर	हरीश करमचंदाणी	196
समीक्षा		
कविताओं के बीच उपस्थित कवि	राहुल शर्मा	201

Scanned with CamScanner

अरुण कुमार पाण्डेय

स्मृतियों से निर्मित जितेन्द्र श्रीवास्तव का काव्य-वैभव

कवि जितेंद्र श्रीवास्तव आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। बीसवीं शताब्दी के आखिरी दशक में काव्य-लेखन की शुरुआत करने वाले कवियों में जितेन्द्र प्रथम पंक्ति के कवि माने जाते हैं। सादगी का सौंदर्य और विषयगत विविधता इनकी कविताओं की विशेषता है। बीसवीं शताब्दी का आखिरी दशक समयगत परिवर्तन के चलते मानव मन की वृत्तियों में व्यापक बदलाव का गवाह रहा है। सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में जैसे परिवर्तन इस दशक में हुए वैसे परिवर्तन पूर्व के कई दशकों में नहीं हुए थे। इन बदलावों का सीधा असर सामाजिक संबंधों पर पड़ा। शताब्दियों से चले आ रहे कितने ही पारिवारिक-सामाजिक मूल्य ध्वस्त हो गए, जीवन में पूंजी की महत्ता बढ़ी, गाँव से शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। इस पलायन से जड़ों से उखड़ी हुई एक ऐसी पीढ़ी तैयार हुई जिसके पास घर-परिवार, रिश्ते-नाते सब से दूर स्मृतियों की गठरी के साथ जीवन-यापन और आजीविका के लिए संघर्ष के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। यही कारण है कि उस दौर के कवियों-साहित्यकारों के ऊपर स्मृतियों का दबाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। किन्तु यह गौर करने की बात है कि स्मृतियों का जितना जीवंत और सार्थक प्रयोग जितेन्द्र की कविताओं में मिलता है, वह अन्य कवियों में दुर्लभ है। इनकी यही विशेषता इन्हें इनके समकालीनों में विशिष्ट बना देती है और कविता के पाठकों को एक आश्वस्ति प्रदान करती है।

आज के दौर का मूल्यांकन करते हुए एक बात सबसे ज्यादा दुहराई जा रही है कि 'हमारा समय स्मृति-लोप का समय है', 'भौतिक विकास की आपाधापी ने मनुष्य को इतना वर्तमान जीवी बना दिया है कि अपने अतीत को जानना और अतीत से जुड़ी स्मृतियों को सहेजना उसके लिए लगभग असंभव हो गया है', 'विकास की आँधी ने उसके स्मृति पटल को धूमिल कर दिया है, बीता हुआ कल उसके लिए उतना महत्त्वपूर्ण नहीं जितना कि आज का दिन'। लेकिन आज के समय पर लगाए जाने वाले ये आरोप क्या पूर्णतया सही हैं? इसे समझना बहुत जरूरी है। यदि ये आरोप सच हैं तो यह इस दौर का सबसे बड़ा संकट है क्योंकि अपनी स्मृतियों से कटा हुआ कोई भी समाज अपने भविष्य को आदर्श ऊँचाइयों तक नहीं ले जा सकता है। स्मृतियाँ व्यक्ति को उसकी जड़ों से जोड़े रखती हैं और उसके संवेदनात्मक धरातल का विस्तार करती है। स्मृतियों के सहारे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को आकार देता है। स्मृतियाँ ही संस्कृति का निर्माण करती हैं और वही इतिहास का दर्जा भी पाती हैं। स्मृतिलोप के शिकार व्यक्ति का अनुभव वर्तमान के उस क्षण विशेष तक सीमित होता है जिसमें वह साँसे ले रहा होता है। इसलिए अगर स्मृतियाँ क्षरित होंगी तो इसका सीधा और नकारात्मक प्रभाव मनुष्यता पर पड़ेगा। ऐसे में मनुष्यता को बचाने के लिए यह आवश्यक है कि मानव-समाज अपने जातीय-इतिहास और अपने व्यक्तिगत जीवन की स्मृतियों से गहराई से जुड़ा रहे। ऐसे में यह सुखद है कि हमारे समय पर लगने वाले इन आरोपों और आशंकाओं के बीच जितेंद्र श्रीवास्तव की कविताएँ हमें स्मृतियों को सहेजने का गुर सिखाती हैं। हमें हमारे इतिहास और बीते हुए कल की महत्ता समझाती हैं।

कवि की कविताओं से गुजरते हुए एक बात विशेष रुप से ध्यान खींचती है कि उनकी स्मृतियाँ बहुत साफ-सुथरी और स्पष्ट हैं। उनसे वर्तमान का द्वंद तो है किंतु ऐसा बिल्कुल नहीं कि वर्तमान पर

अरुण कुमार पाण्डेय : युवा समीक्षक। निरंतर लेखन।
फ्लैट नंबर 202, सुंदर अपार्टमेंट, गली नंबर 4, नेब सराय, नयी दिल्ली-110068
मो. : 8826201539

Scanned with CamScanner